ध्यान कीजिए -

अव्ययी भाव समास - इसमें पहला पद अव्यय (प्रधान) और दूसरा पद संज्ञा होता है। समस्त पद में अव्यय के अर्थ की प्रधानता रहती है।

जैसे- प्रतिदिन - दिन-दिन
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार,
यथा विधि - विधि के अनुसार,
यथार्थ - अर्थ के अनुसार
प्रत्येक - एक-एक के प्रति
आजन्म - जन्म पर्यन्त
यथारुचि - रुचि के अनुसार
भरपेट - पेट-भर

तत्पुरुष समास - जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें कर्ताकारक और सम्बोधन को छोड़कर सभी कारकों में विभक्तियाँ लगाकर समास विग्रह किया जाता है।

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद है -

1. जहाँ पूर्वपद से कर्म कारक की विभक्ति का लोप होता है, वहाँ कर्म तत्पुरुष होता है-

यथा - सुखप्राप्त - सुख को प्राप्त करने वाला
माखनचोर - माखन को चुराने वाला
गिरहकट - गिरह को काटने वाला
गगन चुम्बी - गगन को चूमने वाला
स्वर्ग प्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त
चिड़ीमार - चिड़ियों को मारने वाला
तिलचट्टा- तेल को चाटने वाला
गृहागत - गृह को आगत (आया हुआ)

2. करण तत्पुरुष - यहाँ पूर्वपद से करण कारक की विभक्ति का लोप हो, वहाँ करण तत्पुरुष होता है -

यथा- अकाल पीड़ित - अकाल से पीड़ित
ईश्वर प्रदत्त - ईश्वर द्वारा प्रदत्त
तुलसीकृत - तुलसी द्वारा कृत
दयार्द्र - दया से आर्द्र
मदमस्त - मद से मस्त
मनगढ़त - मन से गढ़ा हुआ
मनमाना - मन से माना
रेखांकित - रेखा से अंकित

3. सम्प्रदान तत्पुरुष - जहाँ समास के पूर्वपद से सम्प्रदान की विभक्त 'के लिए' का लोप होता है, वहाँ सम्प्रदान तत्पुरुष होता है।

जैसे- गुरु दक्षिणा - गुरु के लिए दक्षिणा
गौशाला - गौ के लिए शाला
राहखर्च - राह के लिए खर्च
देशभक्ति - देश के लिए भक्ति
रसोईघर - रसोई के लिए घर
सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह

4. अपादान तत्पुरुष - जहाँ समास के पूर्व पद की अपादान की विभक्ति 'से' (विलग होने के भाव) का लोप हो, वहाँ अपादान तत्पुरुष होता है।

जैसे- ऋणमुक्त - ऋण से मुक्त
धनहीन - धन से हीन
जन्मांध - जन्म से अंधा
पथभ्रष्ट - पथ से भ्रष्ट
पदच्युत - पद से च्युत
भयभीत - भय से भीत

5. सम्बन्ध तत्पुरुष - जहाँ समास के पूर्व पद में संबंध तत्पुरुष की विभक्ति - 'का,के,की',का लोप हो वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे- अमृतधारा - अमृत की धारा
आज्ञानुसार - आज्ञा के अनुसार
गंगातट - गंगा के तट
मृत्युदण्ड - मुत्यु का दण्ड
राजमाता - राजा की माता
सचिवालय - सचिव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष - जहाँ अधिकरण कारक की विभक्ति - 'में, पर', का लोप होता है, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसे- आपबीती - आप पर बीती
कार्यकुशल - कार्य में कुशल
गृहप्रवेश - गृह में प्रवेश
देशाटन - देश में अटन
लोकप्रिय - लोक में प्रिय
शरणागत - शरण में आगत

कर्मधारय समास-कर्मधारय का प्रथम पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है।
(विशेषण+विशेष्य (संज्ञा) = कर्मधारय)

जैसे- महाकवि - महान है जो कवि
नराधम - अधम है नर जो
नीलकमल - नीला है कमल जो
सद्धर्म - सत् है धर्म जो
क्रोधाग्नि - क्रोध रूपी अग्नि
सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह
वचनामृत - वचन रूपी अमृत
महाराजा - महान है जो राजा
बैलगाड़ी - बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी
कापुरुष - कायर है जो पुरुष
वनमानुष - वन में रहने वाला मनुष्य
देहलता - देह रूपी लता
मृगलोचन - मृग के समान लोचन
स्त्रीरत्न - स्त्री रूपी रत्न
पीताम्बर - पीत है अम्बर जो

द्विगु समास - जिस समास का प्रथम पद संख्यावाचक और अन्तिम पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे- दोपहर - दो पहरों का समाहार
त्रियुगी - तीनों युगों का समाहार
चौराहा - चार राहों का समाहार
पंचवटी - पाँच वटों का समाहार
अठन्नी - आठ आनों का समाहार
षट्कोण - छः कोणों का समाहार
सप्तर्षि - सात ऋषियों का समाहार
नवग्रह - नव ग्रहों का समाहार

4. समास किसे कहते हैं। उदाहरण देकर समझाइए।
5. समास के प्रकार लिखिए और प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार

1. 'सच्चाधर्म' एकांकी को कहानी विधा में लिखिए।
2. रंगमंच की सज्जा एवं अभिनय को ध्यान में रखते हुए एकांकी के प्रदर्शन के लिए आवश्यक सामग्रियों की सूची तैयार कीजिए।
3. विद्यालय के किसी कार्यक्रम में इस एकांकी को सहपाठियों के साथ मिलकर अभिनीत कीजिए।
4. शिवाजी और सम्भाजी का चरित्र इतिहास की पुस्तकों से संकलित करें।

शब्दार्थ

यज्ञोपवीत = जनेऊ, एक संस्कार। **त्रिकाल** = सुबह, दोपहर, शाम तीन समय की उपासना। **शौच** = शुद्धि, शुचिता, योगशास्त्र के पंच नियमों में एक (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान)। **सत्यवादी** = सत्य बोलने वाला। **अटल** = स्थिर। **अशौच** = अशुद्धि। **निराकरण** = उपाय, समाधान। **भक्ष्याभक्ष** = खाद्य, अखाद्य। **मिथ्या** = झूठ, असत्य। **व्यथित** = दुखी। **कुटुम्ब**=परिवार। **पशोपेश** = उहापोह। **निस्तब्धता** = चुप्पी, सन्नाटा। **मानिन्द** = भाँति तरह। **इहलोक** = यह लोक, यह जीवन। **परलोक** = स्वर्ग। **सियासी मामलात** = राजनीतिक मामले। **उत्कंठा** = लालसा। विलंब न सहने वाली इच्छा। **उद्विग्नता** = परेशानी, चिन्ता, खिन्नता। **अंश** = भाग, हिस्सा।

मातृभूमि का मान

हरिकृष्ण प्रेमी

लेखक परिचय – सुप्रसिद्ध नाटककार हरिकृष्ण 'प्रेमी' का जन्म सन् 1908 में मध्यप्रदेश स्थित गुना शहर में हुआ था। माखनलाल चतुर्वेदी के साथ 'त्यागभूमि' में पत्रकार के रूप में आपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की। पत्रकार एवं प्रकाशक के रूप में लाहौर में भी रहे। आपकी प्रथम रचना 'स्वर्ण विधान' एक गीतिनाट्य है जो 1930 ई. में प्रकाशित हुई।

'प्रेमी' जी एक सफल नाटककार हैं। आपके नाटकों में से 'बंधन', 'छाया', 'ममता' सामाजिक नाटक हैं, 'पाताल विजय' 'पौराणिक नाटक है।' 'प्रेमी' जी ने ऐतिहासिक नाटक ही सर्वाधिक लिखे हैं। उनमें से प्रमुख हैं,–'रक्षाबंधन', 'शिवासाधना', 'प्रतिशोध', 'आहुति', 'स्वप्नभंग', 'विषपान' और 'भग्न प्राचीर' । आपके प्रमुख एकांकी हैं – 'बेड़ियाँ', 'बादलों के पार', 'वाणी मंदिर', 'नया समाज', 'पाश्चात्य', 'यह भी खेल है', 'रूप शिखा', 'मातृभूमि का मान' एवं 'निष्ठुर न्याय'।

हरिकृष्ण 'प्रेमी' का रचना समय छायावाद के उत्तरार्द्ध से शुरू होता है। वह स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त राष्ट्रीय जागरण एवं आन्दोलनों का समय था। राष्ट्रीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, त्याग, तपस्या, सेवा, बलिदान एवं सामाजिक चेतना के लिए 'प्रेमी' जी ने अतीत में जाकर भारत की गौरवशाली परंपरा, उदात्त मानवीय मूल्यों, वीरता, साहस, पराक्रम आदि की रचनात्मक भाव भूमि तैयार की है। समय की आवश्यकता के अनुरूप आपने नाटक एकांकियों में – हिन्दू मुस्लिम सामंजस्य, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व का संदेश दिया। 'प्रेमी' जी ने मानवीय प्रेम और देशभक्ति की रसात्मक अनुभूति के लिए अपनी रचनाओं को आदर्शवादी और विद्रोही स्वरूप दिया है। उनकी रचनाओं में विद्रोह नकारात्मक न होकर नए सामाजिक वातावरण के निर्माण के लिए है। प्रेमी जी के नाटकों में स्वच्छन्दतावादी शैली का संयमित एवं अनुशासित प्रयोग हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से आपके नाटक बहुत सफल हैं। आप किसी समस्या का चित्रण करते हुए उसका हल अवश्य देते हैं और इस सम्बंध में गांधी जी के जीवन दर्शन का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा है।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत एकांकी में हाड़ा राजपूत वीर सिंह के बलिदान का चित्रण किया गया है। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का एकांकी है। मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा ने सेनापति अभय सिंह से बूँदी के राव हेमू के पास प्रस्ताव भेजा कि बूँदी मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले जिससे राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति का केन्द्रीयकरण किया जा सके। लेकिन राव हेमू ने स्पष्ट कर दिया था कि बूँदी स्वतंत्र रहकर महाराणाओं का आदर कर सकता है, अधीन रहकर सेवा नहीं कर सकता। हाड़ा प्रेम का अनुशासन मानते हैं, शक्ति का नहीं। वे प्रस्ताव ठुकरा देते हैं। दूसरी तरफ राणा लाखा नीमरा के मैदान में बूँदी से पराजित होने के कलंक को धोने के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि ''जब तक बूँदी दुर्ग पर ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगा'' लाखा की प्रतिज्ञा के निमित्त मेवाड़ में ही नकली बूँदी दुर्ग बनाकर उसके विध्वंस से व्रत पालन की योजना बनाई जाती है। युद्ध में वास्तविकता लाने हेतु वीरसिंह सहित कुछ सैनिक नकली दुर्ग की रक्षा करते हैं। वीरसिंह उसके साथी नकली बूँदी को प्राणों से भी प्रिय मानते हैं क्योंकि बूँदी हाड़ाओं की मातृभूमि है। वे बूँदी का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। अन्त में मेवाड़ की भारी सेना के सामने वीरसिंह और साथी नकली बूँदी की रक्षा करते-करते अपना बलिदान कर देते हैं। इस बलिदान से राजपूतों की एकता का मार्ग प्रशस्त होता है।

एकांकी का प्रमुख चरित्र वीरसिंह है। नकली ही सही परन्तु बूँदी उसकी मातृभूमि है और वह मातृभूमि का अपमान नहीं सह सकता। बूँदी के सम्मान में अपने प्राण देकर उसने सिद्ध कर दिया कि जन्मभूमि प्राणों से भी प्रिय है। यह एकांकी देश प्रेम की प्रेरणा देता है और मातृभूमि की सेवा हेतु उसकी आन-बान-शान के लिए प्राणाहुति देने का भाव जगाता है।

मातृभूमि का मान

पहला दृश्य

स्थान : बूँदीगढ़। बूँदी के राव हेमू अपने कमरे में मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बात कर रहे हैं।

अभयसिंह : महाराव, सिसोदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है।

राव हेमू : तो फिर आप बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए हैं?

अभयसिंह : महाराव, हम राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है ? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें।

राव हेमू : और वह केंद्र हैं - चित्तौड़।

अभयसिंह : इसमें भी कोई संदेह है, महाराव! चित्तोड़ का गत गौरव फिर लौटा है। जो राजवंश पहले मेवाड़ के अधीन थे, महाराणा लाखा चाहते हैं, आज भी उसी तरह रहें। बूँदी राज्य भी सदा से मेवाड़ के आश्रित.....।

राव हेमू : बूँदी राज्य सदा से मेवाड़ के आश्रित, यह तुम क्या कहते हो, अभयसिंह जी !हाड़ा वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा। चाहे वह विदेशी शक्ति हो, चाहे वह मेवाड़ का महाराणा हो।

अभयसिंह : महाराव, आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह ! प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज है। इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उसका कल्याण है। रह गई बात एक माला में गूँथने की, सो वह माला तो बनी है। हाँ, उस माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा-वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं,। मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति-भाइयों पर अपनी तलवार आज़माने की इच्छा हुई है, तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। बूँदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता।

अभयसिंह : तो मैं जाऊँ।

राव हेमू : आपकी इच्छा।

(दोनों का दो तरफ प्रस्थान)

पट परिवर्तन

दूसरा दृश्य

(स्थान - चित्तोड़ का राजमहल। महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं)

लाखा : मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास में मैंने कलंक का टीका लगाया है। इस बार मुट्ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उसमें मेवाड़ के आत्म-गौरव को कितनी ठेस पहुँची है, यह मेरा हृदय जानता है।

(अभयसिंह का प्रवेश और महाराणा को अभिवादन करना)

अभयसिंह : महाराणाजी, दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंह जी, आज मैं दरबार में नहीं जाऊँगा। आप जानते हैं कि जब से हमें नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है। बाप्पा रावल और वीरवर हम्मीर का रक्त जिसकी धमनियों में बह रहा हो, वह प्राणों के भय भाग जाए, यह कितने कलंक की बात है।

अभयसिंह : किंतु जरा सी बात के लिए आप इतना शोक क्यों करते है, महाराणा? हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण कर दिया। आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। आप तो तब भी प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे, किंतु हमीं लोग आपको वहाँ से खींच लाए। इसमें आपका क्या अपराध है, और इसमें मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कौन सा कारण है ?

महाराणा : जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी अपयश, कलंक या अपमान का कारण नहीं होता। किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवत रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है। सुनो अभयसिंह जी, मैं अपने मस्तक के इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूँ।

अभयसिंह : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हैं।

महाराणा : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुँचा है। महारावल बाप्पा का वंशज मैं, लाखा, प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।

अभयसिंह : महाराणा! छोटे-से बूँदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? बूँदी को उसकी धृष्टता के लिए तो दंड दिया ही जाएगा, लेकिन हाड़ा लोग कितने वीर हैं! युद्ध करने में वे यम से भी नहीं डरते। इसमें संदेह नहीं कि अंतिम विजय हमारी होगी, किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे। इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करें।

महाराणा : आप क्या कहते हैं, सेनापति ? क्या कभी आपने सुना है कि सूर्यवंश में पैदा होने वाले पुरुष ने अपनी प्रतिज्ञा को वापस लिया हो ? 'प्राण जाएँ पर वचन न जाए'- यह हमारे जीवन का मूल-मंत्र है। जो तीर तरकश से निकलकर, कमान पर चढ़कर छूट गया, उसे बीच में नहीं लौटाया जा सकता। मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ। और इस बात की हाल के युद्ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता में हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है - वह पूर्ण होनी ही चाहिए।

(नेपथ्य में गान)

ये सागर से रत्न निकाले। युग-युग से हैं गए सँभाले।
इनसे दुनिया में उजियाला। तोड़ मोतियों की मत माला।

ये छाती में छेद कराकर, एक हुए हैं हृदय मिलाकर।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियों की मत माला।

(गाते गाते चारणी का प्रवेश)

महाराणा : तुम कुछ गा रही थी, चारणी ? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की शृंखला बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थी। किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ।

चारणी : यह आप क्या कहते हैं महाराणा ? आपके विवेक पर सबको विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से आप हाड़ा शक्ति और साधन में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें।

महाराणा : चारणी, तुम बहुत देर से आई!

अभयसिंह : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूँदी के गढ़ को जीत न लें अन्न-जल ग्रहण न करेंगे।

चारणी : दुर्भाग्य! (कुछ सोचकर) महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। देश का कोई शुभचिंतक इस विद्वेष की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता।

अभयसिंह : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए।

चारणी : उसका एक ही उपाय है। वह यह कि यहीं पर बूँदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए। महाराणा उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है?

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूँगा। किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा। सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने का प्रबंध करें।

(सबका प्रस्थान)

पट प्रदर्शन

तीसरा दृश्य

(चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश, नकली दुर्ग का मुख्य दरवाजा महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश।)

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया ? ठीक बन गया है न ?

महाराणा : क्यों न बनता ! निसंदेह यह ठीक बूँदी-दुर्ग की हू-ब-हू नकल है। अब इस पर चढ़ाई करने का खेल खेला जाए। इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष नहीं होगा, लेकिन अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा। उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से सोचना होगा कि बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह बाध्य किया जाए।

अभयसिंह : निश्चय ही महाराज ! शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे? इस दुर्ग में कोई तो हमारा पथ-प्रतिरोध करने वाला होना चाहिए।

अभयसिंह : हाँ, खेल में भी तो कुछ वास्तविकता आनी चाहिए। मैने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे, जो बंदूकों से हम लोगों पर छूँछे वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा और फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा, अब हम चलें।

(दोनों का प्रस्थान । दूसरी ओर से वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश)

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियो ! तुम देख रहो हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी : हाँ सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूँदी का दुर्ग है।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं किंतु क्या हम लोग अपनी मातृभूमि का अपमान होने देंगे ? यह हमारे वंश के मान का मंदिर है। क्या इसे मिट्टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी : किंतु यह तो नकली बूँदी है।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें ! नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहाँ बूँदी का अपमान आसानी से नहीं किया जा सकता। आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा, यहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि सिसोदियों और हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।

तीसरा साथी : लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं। क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है। हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुँचाना चाहिए।

वीरसिंह : जिस जन्मभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने उनके नमक का बदला दिया है। लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देंगे। आज ऐसा ही अवसर आ पड़ा है।

पहला साथी : निश्चय ही जहाँ पर बूँदी है, वहाँ पर हाड़ा है, और जहाँ पर हाड़ा है, वहाँ पर बूँदी है। कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता। जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

वीरसिंह : मेरे वीरो ! तुम अग्नि कुल के अँगारे हो। अपने वंश की आभा को क्षीण न होने देना। प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य-पताका को स्थापित न होने देंगें।

सब लोग : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज न फहराने देंगे।

वीरसिंह : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती। जिस बूँदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं, उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है। चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें।

पट परिवर्तन

चौथा दृश्य

(स्थान : बूँदी के नकली दुर्ग का बंद द्वार। महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : सूर्य डूबने को आया। यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूँदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। वीरसिंह और उसके मुट्ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

अभयसिंह : हाँ महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो-घड़ी में खेल खत्म हो जाएगा, लेकिन हमें छूँछे वारों का मुकाबला करने के बजाय हाड़ाओं के अचूक निशानों का सामना करना पड़ा। यद्यपि ये लोग गिनती में थोड़े हैं, किंतु इन्होंने दीवारों की आड़ में उपयुक्त स्थान बनाकर हम पर गोली और तीर बरसाना प्रारंभ कर दिया। हमारी सेना इस आकस्मिक प्रहारों से भौंचक्की हो गई। अब दुर्ग के भीतर के हाड़ाओं की युद्ध-सामग्री समाप्त हो गई है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी होने में कुछ ही क्षणों का विलम्ब है।

महाराणा : यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई। यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना झंडा फहराने का अवसर मिल जाता, तो मुझे जरा भी संतोष न होता, और सच पूछो तो मुझे वीरसिंह की वीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता था कि ऐसे वीर के प्राणों को किसी प्रकार रक्षा हो सकती।

अभयसिंह : मैंने भी जब दुर्ग से अग्नि वर्षा होती देखी, तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था और कुछ क्षणों के लिए सफेद झंडा फहराकर मैंने युद्ध रोक दिया था। उसके पश्चात् मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह की उसके साहस के लिए प्रशंसा की। साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ । तुम महाराणा के नौकर हो, तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार न उठाना चाहिए। किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है। हम उस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं। महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं, तो खुशी से ले लें। लेकिन हम इतने कायर और निष्प्राण नहीं है कि अपनी आँखों से बूँदी का अपमान होते देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पताका फहराएगी।

महाराणा : निश्चय ही इन वीरों की जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय है। यह मैं जानता हूँ कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा करने का कोई उपाय नहीं है। इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी। वह देखो दुर्ग की उस दरार में खड़ा हुआ वीरसिंह कितनी फुर्ती से बाण-वर्षा कर रहा है। अकेला ही हमारे सैकड़ों सैनिकों की टोली को आगे बढ़ने से रोके हुए है।

धन्य हैं ऐसे वीर ! धन्य हैं वह माँ जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया। धन्य है वह भूमि ! जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं।

(जोर का धमाका और प्रकाश होता है)

महाराणा : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण-पखेरु उड़ गए। बूँदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए। अब हम विजयश्री प्राप्त कर सके। जाओ दुर्ग पर मेवाड़ का पताका फहराओं और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहाँ ले आओ।

(अभयसिंह का प्रस्थान)

महाराणा : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है। व्यर्थ के दंभ ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली।

(चारणी का प्रवेश)

चारणी : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी। अब तो आपने अपने सिर का कलंक का टीका धो लिया। यह देखिए बूँदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजय-पताका फहरा रहे हैं। वह सुनिए, मेवाड़ की सेना में विजय-दुंदुभि बज रही है।

महाराणा : चारणी, क्यों पश्चात्ताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो ? न जाने किस बुरी सायत में मैंने बूँदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था। वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं, मेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है। मैं देखता हूँ, ऐसी वीर जाति को अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है।

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूँदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता ?

(वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : (शव के पास बैठते हुए) चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा माँगता हूँ, किंतु क्या बूँदी के राव तथा हाड़ा-वंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा ?

(राव हेमू का प्रवेश)

राव हेमू : क्यों नही महाराणा ! हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा! सब देश, जाति और वंश की मान-रक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं। हमारी तलवार अपने ही स्वजनों पर न उठनी चाहिए। बूँदी के हाड़ा सुख और दुख में चित्तोड़ के सिसोदियों के साथ रहे हैं और रहेंगे। हम सब राजपूत अग्नि के पुत्र हैं, हम सबके हृदय में एक ज्वाला जल रही है। हम कैसे एक दूसरे से पृथक् हो सकते हैं। वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

महाराणा : निश्चय ही महाराज ! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएँ। (सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं।)

(पटाक्षेप)

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. बूँदी के राव मेवाड़ के अधीन क्यों नहीं रहना चाहते?
2. मुट्ठी भर हाड़ाओं ने किसे पराजित किया था ?
3. वीरसिंह का प्राणान्त कैसे हुआ ?
4. ''अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।'' यह कथन किसका है ?
5. महाराणा लाखा वीरसिंह के किस गुण से प्रसन्न हुए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. महाराणा लाखा ने कौन-सी प्रतिज्ञा की थी ?
2. चारणी ने राजपूत-शक्तियों के विषय में महाराणा से क्या कहा था ?
3. वीरसिंह ने जन्म-भूमि की रक्षा के विषय में अपने साथियों से क्या कहा था ?
4. महाराणा अपनी विजय को पराजय क्यों कहते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'वीरसिंह का चरित्र मातृभूमि के सम्मान की शिक्षा देता है' इस कथन को सिद्ध कीजिए।
2. महाराणा और अभयसिंह के चरित्र की दो-दो विशेषताएँ लिखिए।
3. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए -
   1. ये सागर से रत्न निकाले ..... तोड़ मोतियों की मत माला।
   2. ''नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है ..... हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।''
   3. हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। ..... वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

भाषा अध्ययन -

प्रश्न 1. **सामासिक पदों का विग्रह कर समास लिखिए :-**

राजपूत, जन्मभूमि, महाराजा, सेनापति, बाण-वर्षा, आदरभाव।

ध्यान दीजिएए -

<u>बहुव्रीहि समास</u> - जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे- कमल नयन - कमल जैसे नयनों वाला (राम)

दशानन-दस आनन हैं जिसके (रावण)

चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी (विष्णु)

दिगंबर-दिशाएँ है वस्त्र जिसकी (शिव)

पंचानन-पाँच आनन हैं जिसके (शिव)

लंबोदर-लंबा है उदर जिसका (गणेश)

त्रिवेणी-तीन नदियों का संगम स्थल (प्रयाग)

मक्खीचूस-मक्खी को चूसता है जो (कंजूस)

द्वन्द्व समास – जिस समास में दोनो पद प्रधान हों, वहाँ द्वन्द्व समास होता है। दोनों पदों को मिलाते समय योजक लुप्त हो जाता है।

जैसे– अन्न–जल = अन्न और जल

अमीर–गरीब = अमीर और गरीब

ऊँच–नीच = ऊँच और नीच

गंगा–यमुना= गंगा और यमुना

नर–नारी = नर और नारी

माता–पिता = माता और पिता

रात–दिन= रात और दिन

प्रश्न 2. बहुब्रीहि समास उदाहरण देकर समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. बाप्पारावल और हम्मीर की अजेय वीरतापूर्ण उपलब्धियों पर प्रामाणिक जानकारी एकत्र कीजिए।
2. अपने प्रदेश के बलिदानी वीरों पर नाटिका तैयार कर विद्यालय में मंचन कीजिए।
3. राजस्थान के महाराणा प्रताप और अन्य समकालीन वीरों की यश गाथा पढ़िए और उनके चित्र संकलित कीजिए।

शब्दार्थ

पथ प्रतिरोध = रास्ता रोकना। **व्यथित** = दुखी। **व्याघात** = बाधा, अड़चन। **सायत** = लग्न, समय। **निष्प्राण** = प्राण रहित। **धृष्टता** = उद्दंडता। **विध्वंस**=विनाश। **पौरुष** = पराक्रम, शौर्य।

परीक्षा

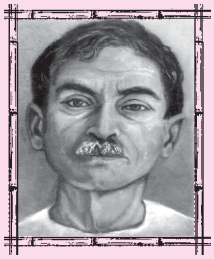

लेखक परिचय – हिन्दी साहित्य के उपन्यास-सम्राट एवं अप्रतिम कथाकार मुंशी प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक ग्राम में 31 जुलाई सन् 1880 ई. में हुआ था। प्रेमचन्द जी का वास्तविक नाम धनपतराय था; उन्हें नबाबराय के नाम से भी जाना जाता था। उनके पिता का नाम अजायबराय तथा माता का नाम आनन्दीदेवी था।

मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप एक स्कूल में अध्यापक हो गए। इसके बाद स्वाध्यायी रूप में स्नातक-परीक्षा (बी.ए.) उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए; किन्तु अपने स्वतंत्र एवं क्रान्तिकारी विचारों के कारण उन्होंने शासकीय सेवा का परित्याग करना पड़ा। फलत: आजीवन आर्थिक संघर्षों का सामना करते हुए भी समाजोपयोगी उत्कृष्ट साहित्य-सृजन में संलग्न रहे। इसी बीच आपने 'मर्यादा' पत्र और 'माधुरी' मासिक पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। जीवन-संघर्ष को झेलते हुए सर्जनात्मकता का यह अथक योद्धा 56 वर्ष की आयु में सन् 1936 ई. में दिव्य-ज्योति में विलीन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ - प्रेमचन्द ने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनियाँ आदि सभी मुख्य गद्य विधाओं पर अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

कहानियाँ - 'मानसरोवर' तथा 'गुप्तधन' में आपकी तीन सौ से अधिक कहानियाँ संकलित हैं। पूस की रात, कफन, ईदगाह, पंचपरमेश्वर, परीक्षा, बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी, सुजान भगत आदि प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

उपन्यास – वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

नाटक – कर्बला, संग्राम और प्रेम की वेदी।

निबंध संग्रह – स्वराज्य के फायदे, कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य।

जीवनियाँ – महात्मा शेखसादी, दुर्गादास, कलम-तलवार और त्याग।

प्रेमचंद गरीबों के मसीहा थे। उनकी कहानियों में दीन-दुखियों, महिलाओं, ग्रामीणों तथा समाज के अन्य तिरस्कृत तथा उपेक्षित लोगों के प्रति जन-जागरण तथा जन-चेतना लाने का भाव दिखलाई देता है। वे साहित्य को मनोरंजन का साधन न मानकर जीवन की सच्चाइयों को प्रकाशित करने का पथ मानते हैं। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं के लिए हिन्दी की खड़ी बोली के सरल, सहज, बोधगम्य एवं व्यवहारिक रूप को अपनाया है। उन्होंने भाषा में आकर्षण तथा सहज प्रवाह लाने के लिए अवसरानुकूल उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में मुहावरे तथा सूक्तियाँ भी बहुतायत में मिलती है। उन्होंने परिचयात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विश्लेषणात्मक तथा अभिनयात्मक शैलियों को अपनाया है। उनकी शैली हिन्दी-उर्दू भाषा की मिश्रित शैली है।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते हैं। वे युग प्रवर्तक कहानीकार होने के साथ-साथ नए कहानीकारों में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आधुनिक साहित्य जगत में कहानी-कला को अक्षुण्ण बनाए रखने वाले कथाकारों में वे अग्रणी हैं। उपन्यासों की भाँति उनकी कहानियों में भी आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी प्रवृत्ति मिलती है।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत कहानी देवगढ़ रियासत में दीवान पद के उम्मीदवार के चयन की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। देवगढ़ के दीवान सुजान सिंह स्वयं पद-मुक्त होना चाहते हैं, इसलिए वे नए दीवान की नियुक्ति विषयक विज्ञप्ति को प्रकाशित कराते हैं। इस विज्ञप्ति में योग्यता विषयक शर्तों में कर्त्तव्यबोध ही विचारणीय था। अनेक आवेदक इस पद हेतु आवेदन करते हैं। इनकी जीवन शैली और इनकी कर्त्तव्य परायणता का परीक्षण एक महीने तक चलता है। सब अपने-अपने कौशल और आचार-व्यवहार को उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न करते हैं-एक दिन हॉकी मैच का आयोजन होता है, सब थक जाते हैं। तभी शाम के घिरते अंधेरे में एक बैलगाड़ी कीचड़ में फँस जाती है, सभी खिलाड़ी इस दृश्य को नजर अंदाज कर जाते हैं, किन्तु उनमें से एक खिलाड़ी गाड़ीवान की सहायता के लिए

तत्पर हो जाता है। इसी व्यक्ति का दीवान पद पर चयन होता है। गाड़ीवान के रूप में स्वयं सुजान सिंह थे। कहानी के चरित्रों में दीवान सुजान सिंह और पंडित जानकीनाथ का ही चरित्र उभर कर आता है। महाराज की पारखी दृष्टि और पंडित जानकीनाथ का मानवीय आचरण दोनों चरित्रों को महत्वपूर्ण बनाने वाले गुण हैं और इस चयन हेतु उन्होंने व्यक्ति के साहस, आत्मबल और उदारता जैसे गुणों को ही मानदण्ड माना है। राज्य-व्यवस्था का संचालन कर्त्ता इन गुणों से परिपूर्ण होकर ही राज्य के गरीबों के दुख के प्रति दयावान होकर अपने दृढ़ संकल्प से उसको दूर करने का प्रयत्न कर सकता है। कहानी का स्वर आदर्शवादी है, व्यक्ति आचरण में निहित पर दुख कतरता, सहयोग भावना और सेवा परायणता जैसे गुणों को भी कहानी में उभारा गया है। कहानी का दृश्य-विधान जीवंत है-भाषा सरल और सुबोध है।

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की कि दीनबन्धु ! दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिन्दगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना, तो हारकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की जरूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें वे वर्तमान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं है कि ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई जरूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम, परन्तु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं? केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से, कोई नई फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पण्डितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम रोया करते थे, यहाँ उनकी कोई जरूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अंगरखे और कंटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढँका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे। मि. 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, आजकल बहुत रात गए किवाड़ बन्द करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि. स, द और ज से उनके घरों पर नौकरों के नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मन्दिर के पुजारी को पदच्युत

हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि. 'ल' को किताब से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रन्थ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था। शर्मा जी घड़ी रात से ही वेद-मन्त्र पढ़ने लगते थे और मौलवी साहब को नमाज और तलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। सम्भव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गई, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भलेमानुस लोग शतरंज जैसे गम्भीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेजी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर से खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गर्मी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका।

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से जरा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बन्द ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से ढकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डण्डे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परन्तु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बन्द आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लंगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला-मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?

किसान ने देखा एक गठे हुए बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला-हुजूर मैं आपसे कैसे कहूँ? युवक ने कहा-मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाती है।

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहिए को जोर लगाकर उकसाया। कीचड़ बहुत ज्यादा थी। वह घुटने तक जमीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर जोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर किया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला–महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात मुझे यहाँ बैठना पड़ता।

युवक ने हँसकर कहा–अब मुझे कुछ इनाम देते हो? किसान ने गम्भीर भाव से कहा–नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज मिलती है, चेहरा–मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला–गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।

निदान, महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रात:काल ही से अपनी किस्मतों का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे! न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राज्य के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग–बिरंगी सज–धज बनाए दरबार में आ बिराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

जब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा–मेरे दीवानी के उम्मीदार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ–साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमें ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं है। मैं रियासत के पण्डित जानकीनाथ–सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परन्तु दया और धर्म से कभी न हटेगा।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. सुजानसिंह कौन थे?
2. देश के प्रसिद्ध पत्रों में विज्ञापन क्यों निकाला गया?
3. रियासत देवगढ़ में आए हुए उम्मीदवारों ने कौन सा खेल खेलने की योजना बनाई?
4. किसान की गाड़ी कहाँ फँस गई थी?
5. 'अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ...' यह बात किसने किससे कही?
6. गाड़ी पर किसान के वेश में कौन था?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. राजा दीवान सुजान सिंह का आदर क्यों करते थे.
2. बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा क्या देख रहा था?
3. खिलाड़ियों ने निराश और असफल किसान को किस भाव से देखा?
4. परेशान किसान की सहायता किसने की?
5. युवक को किसान की तरफ देखकर क्या सन्देह हुआ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. 'जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था' इस उक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. दीवान सुजानसिंह ने अपने उत्तराधिकारी का चयन किस प्रकार किया?
3. देवगढ़ रियासत का 'दीवान' पद के लिए जानकीनाथ का चयन क्यों किया गया?
4. 'परीक्षा' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
5. निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए -

   इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी ..... उन तक हमारी पहुँच नहीं है

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए -

   नीति कुशल, धर्मनिष्ठ, आत्मबली, वेद-मंत्र, कृपादृष्टि
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करते हुए संधि का नाम लिखिए -

   परीक्षा, मन्दाग्नि, सहानुभूति, निराशा
3. निम्नलिखित शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए -

   1. जो धर्म को न मानता हो।
   2. जो धर्म को मानता हो।
   3. उपासना करने वाला।
   4. पुत्र के प्रति स्नेह का भाव।
   5. पूजा करने वाला।

योग्यता विस्तार

1. कहानी को संवाद रूप में परिवर्तित कर कक्षा में अभिनय कीजिए।
2. आज का युवा आधुनिक चमक-धमक में पड़कर मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। कक्षा में इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए।
3. 'युवाशक्ति और अनुशासन' विषय पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।
4. आप मुसीबत में फँसे व्यक्ति की मदद कैसे करते हैं, किसी घटना का वर्णन साथियों के साथ बाँटिए।

शब्दार्थ

विनय = प्रार्थना। **तहलका** = हलचल। **सनद** = प्रमाण पत्र। **नेकनामी** = अच्छे कार्य के लिए मिलने वाला यश। **आत्मबल** = आत्मा का बल (साहस)। **शिखर** = चोटी, शीर्ष। **संकल्प** = निश्चय। **चित्त** = हृदय। **नास्तिक** = ईश्वर को न मानने वाले। **कीर्ति** = प्रसिद्धि, प्रशंसा।

बैल की बिक्री

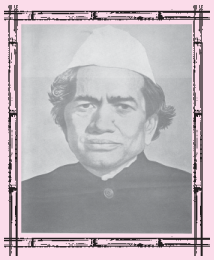

लेखक परिचय – हिन्दी के विनम्र सेवक और संत साहित्यकार सियाराम शरण गुप्त का जन्म सन् 1895 ई. में झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में हुआ था। वे राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के छोटे भाई थे। गुप्त जी की प्रारंभिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में ही सम्पन्न हुई, किन्तु उन्होंने स्वाध्याय द्वारा अंग्रेजी, मराठी, गुजराती तथा बंगला का समुचित ज्ञान प्राप्त किया।

गुप्तजी का रुग्ण जीवन, पत्नी तथा अन्य आत्मीयों के असामयिक निधन से उनका व्यक्तित्व करुणा से भर गया था। व्यक्तिगत जीवन की करुण अनुभूतियाँ उनके साहित्य के विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई है। कवित्व का विकास और साहित्य जगत में प्रतिष्ठा 'सरस्वती' में प्रकाशित रचनाओं के साथ प्रारंभ हुई। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण तो आपके लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। घर के धार्मिक वातावरण और गांधी-दर्शन का आपके ऊपर विशेष प्रभाव रहा है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ की छाप भी उनके साहित्य में परिलक्षित होती है। अन्तिम दिनों में वे दिल्ली में रहे। सन् 1963 में उनका निधन हो गया।

गुप्तजी केवल कवि ही नहीं थे। उन्होंने काव्य के अतिरिक्त नाटकों, निबंधों, उपन्यासों और कहानियों का भी सृजन किया है। उनकी कहानियों में सात्विक उज्ज्वलता के दर्शन होते हैं। सभी कहानियाँ गांधीवादी दर्शन से पूर्णत: प्रभावित हैं। लेखक के सरल व्यक्तित्व की तरह ही उनकी रचनाओं की वस्तु और शैली सरल है।

सियाराम शरण गुप्तजी की प्रमुख रचनाएँ निम्नानुसार हैं –

काव्य	–	आर्द्रा, विषाद, मौर्य विजय, अनाथ, नकुल, पाथेय, दूर्वादल, आत्मोत्सर्ग आदि।
नाटक	–	पुण्यपर्व।
उपन्यास	–	अन्तिम आकांक्षा, नारी और गोद।
निबन्ध संग्रह	–	झूठ-सच।
कहानी संग्रह	–	मानुषी।

'मानुषी' गुप्तजी का एक उत्तम कहानी संग्रह है। प्रेमचन्द की भाँति उन्होंने भी ग्रामीण एवं मजदूर-परिवार के चित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं। कहानियाँ ग्रामीणों की भावनाओं का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं।

गुप्तजी की भाषा सरल, सुस्पष्ट और परिष्कृत है। बीच-बीच में मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता और रोचकता आ गई है। शैली भी सरल, परिमार्जित और स्वाभाविक है। हिन्दी साहित्य जगत में उनका अविस्मरणीय स्थान है

केन्द्रीय भाव

सियारामशरण गुप्तजी ग्रामीण जीवन के चित्रण में सिद्धहस्त रचनाकार हैं, प्रस्तुत कहानी ग्रामीण जीवन में व्याप्त विभिन्न सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करती है।

मोहन ऋणग्रस्त सीमांत किसान है। शिबु उसका लड़का है। सेठ ज्वालाप्रसाद का कर्जदार यह परिवार बैलगाड़ी के सहारे जैसे-तैसे अपनी गृहस्थी चला रहा था, कि दुर्भाग्य से एक बैल मर जाता है। जोड़ी टूट जाती है। शिबु इस दुर्घटना से अधिक प्रभावित होता है वैसे भी उसका मन घर-गृहस्थी में लग नहीं रहा था वह एक बैल की देखभाल से भी जी चुराने लगा। साहूकार के दबाव के कारण शिबू बाजार में अपना बैल बेचकर घर लौटता है – मार्ग में उसे डाकू मिलते हैं शिबू साहस के साथ डाकुओं का सामना करता है। डाकू लूट का धन वहीं छोड़कर भाग जाते हैं। डाकू द्वारा लुटे-पिटे लोगों में सेठ ज्वालाप्रसाद भी हैं, शिबू उन्हें बैल की बिक्री से प्राप्त धन राशि वहीं दे देता है।

लेखक ने कहानी में ऋण ग्रस्तता की समस्या को तो उठाया ही है, बैल के प्रति किसान की ममता का भी इसमें जीवंत उल्लेख है। साहूकार की हृदय हीनता और विपन्न किसान की दयनीयता के माध्यम से सामाजिक

वैषम्य को प्रकट करती यह कहानी मानवीय करुणा को रेखांकित करती है। शिबू इस कहानी का केन्द्रीय चरित्र है, जो अपने साहस के माध्यम से डाकुओं का प्रतिकार तो करता ही है गाँव के लोगों का भी विश्वास अर्जित कर लेता है। शिबू के व्यक्तित्व की तेजस्विता का निरंतर सार्थक विकास कहानी के मूल उद्देश्य को भी प्रकट करती है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ चेतनावान युवक को संवेदनशील ही नहीं बनाती, बल्कि उसे कर्त्तव्यबोध से भी अनुप्राणित कर देती है। वह बैल की बिक्री करने के बाद बैल से विलग होने की पीड़ा से पिघल जाता है। उसे लगने लगता है, जैसे बैल उसका भाई तुल्य था। वह पिता के प्रति भी करुणाद्रित हो उठता है।

शिबू के व्यक्तित्व का यह परिवर्तन उसके पिता पर साहूकार द्वारा किए गए अत्याचार की प्रतिक्रिया स्वरूप ही होता है। शिबू के चरित्र के विभिन्न कोणों को उभारती यह कथा-रचना अपने मनोवैज्ञानिक प्रभाव में व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करने वाली है। एक अकेले का साहस कभी-कभी निर्बल भीड़ में भी शक्ति संचार कर देता है। शिबू का साहस इस रूप में भी सराहनीय है, संगठन के माध्यम से अन्याय का सार्थक प्रतिरोध भी कहानी के उद्देश्य में समाहित है।

कहानी का अंत व्यंग्य की तीव्रता में होता है। शिबू ने अपने साहस के बल पर डाकुओं से अपने रुपयों की रक्षा कर ली किन्तु सेठ ज्वालाप्रसाद से वह इनकी रक्षा नहीं कर पाता है। ऋण ग्रस्तता की समस्या पर गहरा आघात करती यह कहानी अपनी दृश्य रचनाओं और भाषा में ग्रामीण परिवेश को प्रकट करती है। प्रेमचंद की कथा परंपरा में रची यह कहानी अपनी प्रस्तुति में महत्वूपर्ण है।

बैल की बिक्री

कई साल से फसल बिगड़ रही थी। बादल समय पर पानी नहीं देते थे। खेती के पौधे अकाल वृद्ध होकर असमय में ही मुरझा रहे थे। परन्तु महाजनों की फसल का हाल ऐसा न था। बादल ज्यों-ज्यों अपना हाथ खींचते, उनकी खेती में त्यों-त्यों नए अंकुर निकलते थे।

सेठ ज्वालाप्रसाद उन्हीं महाजनों में से थे! विधाता के वर से उनका धन अक्षय था। जिस किसान के पास पहुँच जाता, जीवन-भर उसका साथ न छोड़ता। अपने स्वामी की तिजोरी में निरन्तर जाकर भी दरिद्र की झोंपड़ी की माया उससे छोड़ी न जाती थी!

मोहन वर्षों से ज्वालाप्रसाद का ऋण चुकाने की चेष्टा में था, परन्तु चेष्टा कभी सफल न होती थी। मोहन का ऋण दरिद्र के वंश की तरह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता था। इधर कुछ दिन से ज्वालाप्रसाद भी कुछ अधीर-से हो उठे थे। रुपये अदा करने के लिए वे मोहन के यहाँ आदमी-पर-आदमी भेज रहे थे।

समय की खराबी और महाजन की अधीरता के साथ मोहन को एक चिन्ता और थी। वह थी जवान लड़के, शिबू की निश्चिन्तता। उसे घर के काम-काज से सरोकार न था। बिलकुल ही न था, यह नहीं कहा जा सकता। भोजन करने के लिए यथा-समय उसे घर आना ही पड़ता था। बाप, मजूरी के पैसे लाकर किस जगह रखता है, इसके ऊपर दृष्टि रखनी पड़ती थी। पता मिल जाने पर बीच-बीच में उन्हें सफाई के हाथ से उड़ाना भी पड़ता था। ऐसे ही और बहुत काम थे। दो-चार बार उसे बैलगाड़ी किराए के लिए चलानी पड़ी थी। सम्भव है, यह बेगार चलकर और अधिक करनी पड़ती। परन्तु हाल में ही यह सम्भावना भी असम्भव हो गई है। अचानक एक दिन दो-चार घण्टे की बीमारी से हाल में ही उसका बैल चल बसा था। इस प्रकार ईश्वर ने उसके स्वच्छन्द विचरण के पथ में एक सुविधा और कर रखी थी। घर वालों के साथ

उसका वही सम्बन्ध जान पड़ता था, जो खेती के साथ उन बादलों का होता है, जिनके दर्शन ही नहीं होते। यदि कभी होते भी हैं तो आए हुए धान्य को खेत में ही सड़ा देने भर के लिए।

परन्तु बादल चाहे जैसी शत्रुता रखें, खेती के लिए उनसे प्यारी वस्तु और कोई नहीं होती। मोहन भी शिबू का विचार इसी दृष्टि से करता था। सोचता था, अभी बच्चा है। हमेशा ऐसा ही थोड़े रहेगा। जब वह शिबू की कोई बात आई-गई कर जाता तब उसे अपने मृत पिता की याद आ जाती। उसने भी अपने पिता को कम नहीं खिझाया था। पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का सबसे बड़ा साधन कदाचित् बच्चे को प्यार करना ही है! शिबू का यथेच्छाचार क्षमा करते समय प्राय: मोहन का हृदय गद्‌गद हो उठता था।

उस दिन कलेवा करके शिबू बाहर निकल रहा था। मोहन ने पीछे से कहा-लल्लू! आज मुझे एक जगह काम पर जाना है। बैल की सार साफ करके तुम उसे पानी पिला देना।

शिबू ने पिता की ओर मुड़कर कहा-मुझसे यह बेगार न होगी। मुझे भी एक जगह जाना है।

मोहन जानता था कि काँच की तरह सीधी गरमी दिखाकर इसे झुकाने की इच्छा रखना मूर्खता है। विनती के स्वर में बोला-बेटा, मुझे काम है; नहीं तो तुमसे क्यों कहता? कौन बहुत देर का काम है।

शिबू उसी तरह अविचल कण्ठ से बोला-थोड़ी देर का काम हो या बहुत देर का, मुझे वाहियात कामों की फुरसत नहीं है।

मोहन झुँझला पड़ा। क्रुद्ध होकर बोला-कैसा है रे! बैल को पानी पिलाना वाहियात काम बताता है। किसानी न करेगा तो क्या बाबू बनकर डाकखाने में टिकट बेचेगा?

''ठीक तो कहता हूँ, नाराज क्यों होते हो? कितनी बार कहा-इसे बेच दो, अकेला बँधा-बँधा खा रहा है। सार साफ करो, पानी पिलाओ, भूसा डालो। इधर-से-उधर बाँधों, उधर-से-इधर। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। किसी काम आता हो तो बात भी है!''

''चुप रह ! घर में जोड़ी न होती तो इतनी बातें बनाना न आता। बैल किसान के हाथ-पैर होते हैं। एक हाथ टूट जाने पर कोई दूसरा भी कटा नहीं डालता। मैं इसका जोड़ मिलाने की फिक्र में हूँ; तू कहता है-बेच दो। दूर हो, जहाँ जाना हो चला जा। मैं सब कर लूँगा।''

''जा तो रहा ही हूँ। मैं कुछ ऐसा दबैल नहीं हूँ।'' हँसकर कहता हुआ शिबू घर के बाहर हो गया। मोहन कुछ देर ज्यों-का-त्यों खड़ा रहकर, बड़बड़ाता हुआ उठा और जाकर बैल को थपथपाने लगा। शिबू ने उसकी जो अवज्ञा की थी मानो उसकी क्षति-पूर्ति करने के लिए अपने हृदय का समस्त प्यार ढालने लगा।

उस दिन मोहन ने सार की सफाई और अच्छी तरह की। बैल को पानी पिलाने ले गया। तो सोचा इसे नहला दूँ। उजड्ड लड़के ने बैल का जो अपमान किया था, उसे वह उसके अंतस्तल तक से धो देना चाहता था। नहला चुकने पर अपने अँगोछे से पानी पोंछा, बाँधने की रस्सी को भी पानी से धोना न भूला। सार में बाँधकर भूसा डाला। तब भी मन की ग्लानि दूर न हुई, तो भीतर जाकर रोटी ले आया और टुकड़े-टुकड़े करके उसे खिलाने लगा। वह कहा करता था कि जानवर अपनी बात समझा नहीं सकते, परन्तु बहुत-सी बातें आदमियों से अधिक समझते हैं। इसलिए वह अनुभव कर रहा था कि बैल उसके प्रेम को अच्छी तरह हृदयंगम कर रहा है।

इस तरह आज इतना समय लग गया, जितना लगना न चाहिए था। यह बात उसे उस समय मालूम हुई जब ज्वालाप्रसाद के आदमी ने आकर बाहर से पुकारा-मोहन है?

मोहन सुनकर सन्न-सा खड़ा रह गया। उसे शिबू पर गुस्सा आया! अगर वह पाजी बैल का उसार कर देता तो वह इस आदमी को घर थोड़े मिलता। शंकित मन से बाहर निकल कर बोला-कौन, रामधन भैया! आओ, कुछ खा पी लो।

रामधन ने रुखाई से कहा-हमें फुरसत नहीं है। इसी दम मेरे साथ चलो। तुम-जैसे छँटे हुए आसामी से भी किसी का पाला न पड़ा होगा। तुम्हारे पीछे फिरते-फिरते पैरों में छाले पड़ गए, परन्तु मालिक साहब के दर्शन ही नहीं होते।

मोहन ने देखते ही समझ लिया, मामला ठीक नहीं है। चुपचाप भीतर से लाकर अँगोछा कन्धे पर डाला और उसके पीछे हो लिया।

रास्ते में मोहन ने फसल खराब होने की बात शुरू की। किसानों का गुजारा किस तरह हो रहा है, इस बात की ओर संकेत किया। एक पैसे का सुभीता नहीं है, यह भी स्पष्टत: कहा। रामधन मुँह भारी किए हुए सुनता रहा। मानो उसके मुँह में भी छाले पड़ गए थे। जब उत्तर देना नितान्त आवश्यक हो गया, तब संक्षेप में कह दिया-मालिक से कहना।

मोहन ने कहा - हमारे मालिक तो ...

''चुप रह दुष्ट!''-रामधन ने कहा। कहने का अभिप्राय यह था-मालिक-मैं नहीं हूँ। उच्चारण-भंगिमा का अभिप्राय यह था-मालिक हूँ तो मैं। ''बड़ी देर की बकबक लगाए है। चुका नहीं सकता तो कर्जा लिया ही किसलिए था?''

रामधन के साथ वह ज्वालाप्रसाद की कोठी पर जा पहुँचा।

ज्वालाप्रसाद ने अपने स्वर में संसार-भर का प्रभुत्व भर कर कहा-वादे बहुत हो चुके। अब हमारे रुपये अदा कर दो, नहीं तो अच्छा न होगा!

मोहन ने कहा-मालिक की बातें! खाने को मिलता नहीं रुपये कहाँ से आएँ?

बातों-ही-बातों में ज्वालाप्रसाद की जीभ की ज्वाला बेहद बढ़ उठी। 'मूर्ख', 'बेईमान' आदि जितनी उपाधियों से एकदम वह निरीह मण्डित हो उठा।

मोहन घर न जा सका। रुपये अदा कर दो और चले जाओ, बस इतनी ही बात थी।

शिबू ने तीसरे पहर घर आकर देखा-दद्दा नहीं हैं। मालूम हुआ-सवेरे ज्वालाप्रसाद के आदमी के साथ गए थे। दोपहर की रोटी खाने भी नहीं आए।

शिबू झपाटे के साथ घर से निकलकर ज्वालाप्रसाद के यहाँ जा पहुँचा। पिता को मुँह सुखाए, पसीने-पसीने एक जगह बैठा देखा। बोला-चलो। आज रोटी नहीं खानी है?

आवाज सुनकर दूर से ज्वालाप्रसाद ने कहा-कौन है शिबूआ? दाम लाया या यों ही लिवाने आ गया।

शिबू ने अपने कर्कश कंठ को और भी कर्कश करके कहा-अपनी रुपहट्टी लोगे या किसी की जान? अरे, कुछ तो दया होती! बूढ़े ने सवेरे से पानी तक नहीं पिया। तुम कम-से-कम चार दफे भोजन ठूँस चुके होगे।

मोहन लड़के का ढंग देखकर घबरा उठा। बोला-अरे ढोर, कुछ तो समझ की बात कर। किससे किस तरह बोलना चाहिए, आज तक तुझे यह शऊर न आया।

''न आने दो। चलो, उठो। मैं तुम्हें यहाँ कसाई की गाय की तरह मरने न दूँगा। रामपुर की हाट में सोमवार को बैल बेचकर उनकी कौड़ी-पाई चुका दूँगा।''-कहकर शिबू ने पिता का हाथ पकड़ा और उसे झकझोरता हुआ साथ ले गया।

ज्वालाप्रसाद हत्बुद्धि होकर ज्यों-के-त्यों बैठे रहे। उन्होंने शिबू के जैसा निर्भय आदमी न देखा था। उनके मुँह पर ही उन्हें कसाई बनाया गया! गुस्सा की अपेक्षा उन्हें डर ही अधिक मालूम हुआ। वे भी उसी हाट में रामपुर जा रहे थे। आजकल डाकुओं का बड़ा जोर था। वह शिबुआ भी तो कहीं डाकुओं में नहीं है। कैसा ऊँचा पूरा हृष्ट-पुष्ट पट्ठा है! बोलने में किसी का डर नहीं; चलने में किसी का बन्धन नहीं। दिन-भर फिर किसी काम में ज्वालाप्रसाद का मन नहीं लगा। बार-बार उसका तेज तृप्त चेहरा उन्हें याद आता रहा।

दो दिन में ही ऐसा जान पड़ने लगा-मानो मोहन बहुत दिन का बीमार हो। दिन-भर वह बैल के विषय में ही सोचा

करता। रात को उठकर कई बार बैल के पास जाता। दिन में और लोगों के सामने अपना प्रेम पूर्णरूप से प्रकट करते हुए उसे संकोच होता था। रात के एकान्त में उसे अवसर मिलता, बैल के गले से लिपटकर प्राय: वह आँसू बहाने लगता। यदि कभी शिबू उसका यह आचरण देख लेता तो उसे ऐसा जान पड़ता मानो वह कोई अपराध कर रहा हो।

हाट जाने के एक दिन पहले उसने शिबू से कहा–एक बात बेटा, मेरी मानना। बैल किसी भले आदमी को देना जो उसे अच्छी तरह रखे। दो–चार रुपये कम मिले तो खयाल न करना।

शिबू बिगड़कर बोला–तुम्हारी तो बुद्धि बिगड़ गई है। जब देखो 'बैल–बैल' की रट लगाए रहते हो। मैं मर जाऊँ तो भी शायद तुम्हें बैल के जितना रंज न हो। बैल जिए या भाड़ में जाए, मुझसे कोई मतलब नहीं जो ज्यादा दाम देगा, मैं उसी को बेच दूँगा। हमारा ख़्याल कौन रखता है? मैं भी किसी का न रखूँगा। उस कसाई के रुपये उसके मत्थे मार दूँ, मैं तो इतना ही चाहता हूँ, बस।

मोहन चुपचाप सुनता रहा। थोड़ी देर बाद एक गहरी साँस लेकर वहाँ से हट गया।

जिस समय बैल की रस्सी खोलकर शिबू हाट के लिए जा रहा था, वहाँ मोहन न था। किसी काम के लिए जाने की बात कहकर वह पहले ही बाहर चला गया था।

× × ×

बैल बेच कर शिबू घर लौट रहा था। रुपये उसकी अण्टी में थे तो भी आज उसकी चाल में वह तेजी नहीं थी, जो जाते समय थी। न जाने कितनी बातें उसके भीतर आ–जा रही थीं। बैल के बिना उसे सूना–सूना मालूम हो रहा था। आज के पहले वह यह बात किसी तरह न मानता कि उसके मन में भी उस क्षुद्र प्राणी के लिए इतना प्रेम था। मनुष्य अपने–आपके विषय में जितना अज्ञानी है, कदाचित् उतना और किसी विषय में नहीं है। बार–बार उसे बैल की सूरत याद आती। उसके ध्यान में आता मानो बिदा होते समय बैल भी उदास हो गया था। उसकी आँखों में आँसू छलक आए थे। बैल का विचार दूर करता तो पिता का सूखा हुआ चेहरा सामने आ जाता। बैल और पिता मानो एक ही चित्र के दो रुख थे। लौट–फिरकर एक के बाद दूसरा उसके सामने आ जाता था। आह, उसका पिता इस बैल को कितना प्यार करता था! उसे अनुभव होने लगा कि वह बैल उसका भाई ही था। एक ही पिता के वात्सल्य–रस से दोनों पुष्ट हुए थे। जो पिता जानवर के लिए इतना प्रेमातुर हो सकता है, वह उसके लिए न जाने क्या करेगा? सोचते–सोचते उसका हृदय पिता के लिए आर्द्र हो उठा। हाय! वह अब तक अपने ऐसे स्नेहशील पिता को भी न पहचान सका। उसके हृदय का औद्धत्य आज अपने–आप पराजित हो गया था।

घने वन की छाती पर, पत्थर की पक्की सड़क, दोनों ओर के वृक्षों की छाया का उपभोग करती हुई, निर्जन और बस्ती की परवाह न करके, बहुत दूर तक चली गई थी। दूर–दूर तक आदमी का चिह्न तक दिखाई न देता था। बीच–बीच में कुछ हिरन छलाँगें मारते हुए सड़क पार कर जाते थे। अचानक शिबू ने देखा–एक जगह बहुत–सी बैलगाड़ियाँ ढिली हुई हैं। एक ओर की निर्जनता के आधार पर ही दूसरी ओर की सघनता अवलम्बित है। मानो यही दिखाने के लिए ऊँची सड़क के दोनों ओर लगातार नीची खंदकें चली गई थीं। दो–तीन सौ आदमी उन खन्दियों में चुपचाप दूर तक श्रेणीबद्ध बैठे हुए थे। शिबू ने समझा, सड़क पर साहूकार के आदमी हैं। कुछ वसूल कर लेने के लिए इन आदमियों को परेशान कर रहे हैं। साहूकार का विचार आते ही उसका गर्वित हृदय विद्रोही हो उठा। विचारों की शृंखला छिन्न–भिन्न हो गई। वह तेजी से चलने लगा।

''कौन है, खबरदार, खड़ा रह!''

शिबू ने देखा-पुलिस के सिपाहियों की पोशाक में बन्दूकें लिए हुए पाँच आदमी हैं। मुँह कपड़े से इस तरह बाँधे हुए हैं कि सूरत साफ दिखाई न दे सके। बीच सड़क पर एक कपड़ा बिछा हुआ है। उस पर रुपये, पैसे और गहनों का ढेर लगा है। शिबू को समझने में देर नहीं लगी-डाकू हैं, सिपाही नहीं। दिन-दहाड़े यहाँ लूट हो रही है। सड़क के नीचे खन्दियों में जो लोग बैठे हैं वे लुट चुके हैं। डाकुओं ने धन के साथ मानो उनकी गति और वाणी भी अपहृत कर ली है।

हाँ, तो-एक डाकू फिर से कड़ककर बोला-कौन है, चला ही आ रहा है? खड़ा हो जा। रख दे जो कुछ तेरे पास हो।

शिबू ने देखा-अब रुपये जाते हैं। उसे रुपयों का मोह कभी न था। रुपया-पैसा उड़ाना ही उसका काम था! परन्तु ये रुपये-ये रुपये किस तरह आए हैं, यह बात वह अभी-अभी अनुभव करता आ रहा था। एक क्षण के हिस्से में उसे पिता का सूखा हुआ चेहरा याद आया और दूसरे क्षण उस महाजन का जिसने रुपये चुकाने के लिए उन्हें तीसरे पहर तक भूखा-प्यासा रोक रखा था। ज्यादा विचार करने का अवसर न था। वह छाती तान कर खड़ा हो गया। बोला-मैं रुपये नहीं दूँगा।

बोलने वाला डाकू शिबू का सुदृढ़ कंठ-स्वर सुन स्तम्भित हो गया। इतने आदमी अभी-अभी लूटे गए हैं; इस तरह तो कोई नहीं कह सका।

दूसरा डाकू बन्दूक का कुन्दा मारने के लिए उस पर झपटा। शिबू ने बन्दूक के कुन्दे को इस तरह पकड़ लिया जिस तरह सँपेरे साँप का फन पकड़ लेते हैं। अपने को आगे ठेलता हुआ वह बोला-तुम मुझे मार सकते हो, परन्तु रुपये नहीं छीन सकते। ये रुपये मेरे पिता के कलेजे के खून में तर हैं। मेरे जीते-जी महाजन के सिवा इन्हें कोई नहीं ले सकता। यह कहकर शिबू ने अपने पूरे वेग के साथ निकल जाना चाहा। तब तक पाँचों डाकुओं ने घेरकर उसे पकड़ लिया। वह उच्च कण्ठ से फिर चीत्कार कर उठा। छोड़ दो, मैं रुपया नहीं दूँगा।

शिबू का चीत्कार सुनकर लुटे हुए लोग खन्दियों में उठकर खड़े हो गए। देखने लगे-कौन है, जो प्रत्यक्ष मौत का सामना कर रहा है।

डाकुओं ने एकदम देखा-वे केवल पाँच हैं और दो-तीन सौ आदमी उनके विपक्ष में उठ खड़े हुए हैं। उन्हें विस्मय करने का भी अवसर न मिला कि उन्होंने बन्दूक के बल पर एक-एक दो-दो करके इतने आदमी कैसे लूट लिए हैं। यदि ये इसी उजडु की तरह बिगड़ खड़े हों, तो कौन इनका सामना कर सकता है! भय और साहस संक्रामक वस्तुएँ हैं। शिबू का साहस देख कर उधर लुटे हुए लोगों का भय भी दूर हो रहा था। देखने तक का समय न था, परन्तु डाकुओं ने स्पष्ट देख लिया-एक साथ सब लोगों के भाव बदल गए हैं। उन लोगों में से कुछ खन्दियाँ पार करके सड़क तक भी नहीं आ सके कि डाकू बन्दूकें हाथ में लिए हुए द्रुतगति से सड़क के नीचे उतर गए। लूट का माल उठाने में समय नष्ट करने की अपेक्षा अपने प्राण लेकर भागना ही उन्हें अधिक मूल्यवान प्रतीत हुआ। थोड़ी ही देर में वे लोग आँखों से ओझल हो गए।

लोगों ने आकर शिबू को चारों ओर से घेर लिया। अधिकांश स्त्री-बच्चे और पुरुष अब तक भय के मारे काँप रहे थे। रोग की तरह दूर हो जाने पर भी भय शरीर को कुछ समय के लिए नि:शक्त कर रखता है। स्त्रियाँ शिबू को आशीर्वाद दे रही थीं-बेटा, तेरी हजारी उम्र हो! परन्तु शिबू इस समय भी अपने आपे में न था। वह सोच रहा था कि इनमें अधिकांश ऐसे आदमी हैं, जो रुपये के लिए बुरे-से-बुरे काम कर सकते हैं। रुपया ही इनका सब-कुछ है। उसी रुपये को इन्होंने इस प्रकार कैसे लुट जाने दिया?

भीड़ में से एक आदमी निकलकर शिबू के पास आया। बोला-कौन है, शिब माते? तुमने आज इतने आदमियों को...।

शिबू ने कहा–ज्वालाप्रसाद है। शरीर पर धोती के सिवा कोई वस्त्र नहीं। डाकुओं ने रुपये–पैसे के साथ उसके कपड़े भी उतरवाकर रखवा लिए थे। उसे देखते ही उसका मुँह घृणा से विकृत हो उठा। अण्टी से रुपये निकालकर उसने कहा–बड़ी बात, शिबू माते तुम्हें आज यहीं मिल गए। लो, अपने रुपये चुकते कर लो। अब लुट जाए तो मैं जिम्मेदार नहीं।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. खेतों के पौधे असमय में ही क्यों मुरझा रहे थे?
2. महाजन का नाम क्या था?
3. किसान के हाथ–पैर किसे कहा गया है?
4. शिबू अपना बैल बेचने कहाँ जाता है?
5. डाकुओं की कुल संख्या कितनी थी?
6. मोहन रामधन के साथ कहाँ गया?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मोहन शिबू के विषय में क्यों चिंतित था?
2. मोहन को अपने स्वर्गीय पिता का स्मरण क्यों हुआ?
3. शिबू द्वारा बैल का अपमान करने पर मोहन की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बैल को बेचने के लिए जाते हुए मोहन ने शिबू से क्या कहा?
5. शिबू ने डाकुओं का प्रतिकार किस प्रकार किया?
6. ज्वालाप्रसाद ने मोहन से क्या कहा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. मोहन शिबू को बैल बेचने से क्यों मना करता है?
2. दद्दा के दोपहर में न आपने पर शिबू ने क्या किया?
3. शिबू के द्वारा किए गए व्यवहार की ज्वालाप्रसाद पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बैल के बेचने का निश्चय होते ही मोहन की हालत कैसी हो गई?
5. बैल को बेचने के पश्चात् शिबू की मानसिक स्थिति का चित्रण कीजिए।
6. शिबू का चरित्र चित्रण कीजिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   ''भीड़ में से एक आदमी निकलकर शिबू के पास आया। ..... अब लुट जाए तो मैं जिम्मेदार नहीं।''

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए -

   अन्तस्तल, प्रेमातुर, सज्जन

2. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए -

   स्त्री-पुरुष, यथासमय, क्षतिपूर्ति

3. निम्नलिखित शब्दों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -
   1. जो किसी से भयभीत न हो।
   2. जिसे ज्ञान न हो।
   3. जिसके पास धन नहीं है।
   4. जो क्षय न हो।

4. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए -
   1. बादल समय पर पानी नहीं देते थे। (विधान वाचक)
   2. सेठ ज्वालाप्रसाद अच्छे महाजन थे। (निषेध वाचक)
   3. शिबू बाबू बनकर डाकखाने में टिकट बेचेगा। (प्रश्न वाचक)
   4. मोहन बैल को बहुत प्यार करता है। (विस्मयादि वाचक)

5. आज्ञावाचक वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताइए।

योग्यता-विस्तार

1. शिबू जैसा चरित्र समाज में आपको दिखलाई देता हो तो उसकी विशेषताएँ बतलाइए।
2. सियारामशरण गुप्त और प्रेमचंद की कहानियों में कथानक व चरित्र चित्रण सम्बन्धी कुछ समानताएँ हैं उन्हें लिपिबद्ध कीजिए।
3. शिबू के चरित्र को आधार मानकर किसी नए कथानक को केन्द्र में रखकर लघुकथा लिखिए।

शब्दार्थ

अनुच्छादित = प्रभावित, सीमित होना। **अकाल वृद्ध** = समय के पूर्व कमजोर, नष्ट हो जाना। **विधाता** = परमात्मा। **सरोकार** = सम्बन्ध। **कृतज्ञता** = उपकार का बदला। **दबैल** = डरा हुआ, दबा हुआ। **बाहियात** = व्यर्थ के काम। **अंतस्तल** = हृदय में, मन में। **प्रभुत्व** = शक्ति, दंभ। **निरीह**= कमजोर। **कर्कश कंठ** = दुखी, करुणा भरी आवाज। **हत्बुद्धि** = बुद्धिहीन। **अण्टी** = जेब, धोती के कोने में दबी। **गर्वित** = गर्व से भरा। **अपहृत** = लूट ली, छीन ली। **विकृत** = बिगड़ा स्वरूप।